वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 150 | बुधवार 27 सितम्बर 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

जयपुर के 80 हजार लोगों को मिलेगा बीसलपुर का पानी

जयपुर. कासं

जयपुर में अगले साल से 80 हजार लोगों की आबादी को पीने के लिए बीसलपुर का पानी मिलने लगेगा। इसके बाद इन लोगों को पानी के लिए टैंकर का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। जल स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग बाईजी कोठी, झालाना एरिया, मॉडल टाउन, मनोहरपुरा बस्ती जगतपुरा और उसके आसपास की कॉलोनी में जल्द पाइप लाइन बिछाने का काम शुरू करेगा। पीएचईडी के चीफ इंजीनियर के. डी. गुप्ता ने बताया कि योजना में मनोहरपुरा कच्ची बस्ती में 18 लाख लीटर की कैपेसिटी की पानी की टंकी बनाई जाएगी। इसके अलावा इतनी ही क्षमता का ग्राउंड स्टोरेज बनाया जाएगा। इसके अलावा करीब 80 किलोमीटर एरिया में पाइप लाइन बिछाई जाएगी।

44 करोड़ रुपए की आएगी लागत

इस पूरे एरिया में पानी की लाइन बिछाने, वाटर स्टोरेज बनाने, पंप हाउस बनाने पर करीब 44.30 करोड़ रुपए की लागत आएगी, जिसका काम अगले साल तक पूरा हो जाएगा। इन योजना के पास अभी मैन लाइन को बिछाने का काम लगभग पूरा हो गया है।

80 हजार लोगों की आबादी होगी प्रभावित

वर्तमान में बाईजी की कोठी, झालाना बस्ती, मॉडल टाउन, मनोहरपुरा बस्ती जगतपुरा में पानी की सप्लाई टैंकर और प्राइवेट ट्यूबवेल के जरिए होती है। इन एरिया में करीब 80 हजार लोगों की आबादी रहती है।

10 हजार से ज्यादा कनेक्शन दिए जाएंगे

जगतपुरा, बाईजी की कोठी समेत इन एरिया में 10 हजार से ज्यादा घरों में कनेक्शन दिए जाएंगे। इसके अलावा गैटोर में वर्तमान में स्थापित पंप हाउस का रेनोवेशन करके यहां बचे हुए एरिया में पाइप लाइन बिछाकर लोगों को पानी के कनेक्शन दिए जाएंगे। इस एरिया में करीब 62 किलोमीटर लंबाई में नई लाइनें बिछाई जाएगी, जिसमें पुरानी लाइनों को बदलने के साथ नई लाइन बिछाने का काम शामिल है।

राजस्थान यूनिवर्सिटी की पहली महिला कुलपति ने संभाली कमान: कहा...

कॉम्पिटेटिव एग्जाम्स के लिए नहीं जाना होगा कोचिंग इंस्टीट्यूट, सिलेबस रिवाइज करवाना प्राथमिकता

जयपुर. कासं

राजस्थान यूनिवर्सिटी की नई कुलपति प्रो. अल्पना कटेजा ने मंगलवार दोपहर 12 बजे पदभार ग्रहण किया। इस दौरान यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर, स्टूडेंट्स और अधिकारी कर्मचारियों ने फूल मालाओं से नई कुलपति का स्वागत किया। पदभार ग्रहण करते समय कुलपति की साथी प्रोफेसर रश्मि जैन, प्रो. अंजलि कामा, संगीता भार्गव, प्रो. सरीना कालिया, डॉक्टर चंद्रानी सेन, प्रोफेसर मंजू, डॉक्टर अमिता राजगोयल, प्रो. शोभा दुबे उपस्थित रहीं। कुलपति प्रो. अल्पना कटेजा ने कहा- राजस्थान विश्वविद्यालय प्रदेश ही नहीं बल्कि देश में एक अनपैरेलल इंस्टिट्यूट के तौर पर पहचान रखता आ रहा है। पिछले कुछ समय से इसने अपनी गुणवत्ता को काफी तेजी से खोया है। मेरी सबसे पहली प्राथमिकता यहां के अकेडमिक एन्वायर्नमेंट को इंप्रूव करने की है। उसके लिए जो भी कदम उठाने होंगे, वो काम पहले होंगे।

नेशनल एजुकेशन पॉलिसी को सक्सेसफुली इंप्लीमेंट करना प्राथमिकता

मुझे लगता है कि NEP (नेशनल एजुकेशन पॉलिसी) को हमें सक्सेसफुली इंप्लीमेंट करना चाहिए। इसमें अंडर ग्रेजुएट प्रोग्राम में भी सेमेस्टर स्कीम लागू किए गए हैं, उनको रेगुलराइज करना होगा। बहुत सारी चीज डिलेड हैं। एग्जाम अगर समय पर नहीं होंगे तो उससे बहुत नुकसान होता है। अगर NEP को लागू करना है, सेमेस्टर स्कीमें लागू करनी है तो जो सिलेबस है उसको रिवाइज करना होगा। इसे प्राथमिकता पर करवाएंगे।

यूनिवर्सिटी के पास पर्याप्त संसाधन

स्टूडेंट्स यूनिवर्सिटी में आते हैं, जो सिलेबस होता है, उसे पढ़ना चाहते हैं। लेकिन हर एग्जाम के बाद में जॉब के लिए कॉम्पिटिटिव एग्जाम देने पड़ते हैं। जॉब स्टूडेंट्स की प्रायोरिटी होती है, इसलिए सभी जॉब के पीछे ही दौड़ते हैं और इसके लिए कोचिंग करनी पड़ती है। मुझे लगता है कि जो भी यहां सिलेबस में है, अगर उसे अच्छी तरीके से पढ़ें। उनको कॉम्पिटेटिव एग्जाम्स को क्रैक करने के लिए जो एडिशनल चाहिए होता है, वह माहौल अगर यहां पर उनको मिल जाए तो मुझे नहीं लगता कि कोचिंग इंस्टीट्यूट जाने की आवश्यकता होगी। हमारे पास बहुत बेहतर सुविधाएं है, बेहतरीन टीचर्स है, बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर है। कोचिंग इंस्टीट्यूट में तो ऐसा कुछ भी नहीं है, लेकिन वहां पर सिर्फ माहौल क्रिएट किया जाता है, इससे बच्चे वहां पर जाते हैं।

गर्ल्स सेफ्टी पर करेंगे फोकस

यूनिवर्सिटी में पिछले काफी समय से गर्ल्स सेफ्टी का मामला चला आ रहा है। इसके लिए समय-समय पर कदम भी उठाए गए हैं। यहां पर सीसीटीवी कैमरे भी लगे हैं। उनकी मॉनिटरिंग लगातार की जानी चाहिए। वह फंक्शनल हैं या नहीं है इसको देखा जाएगा। यूनिवर्सिटी में जो गर्ल्स है उनमें अवेयरनेस होनी चाहिए कि उन्हें क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिए। वह कहां एप्रोच कर सकती हैं। छोटी सी भी कोई प्रॉब्लम है तो वह डरे नहीं शेयर करें। कोई भी प्रॉब्लम है हम उन्हें वहीं पर सॉल्व करेंगे। कोई बड़ी प्रॉब्लम नहीं होगी।

76 साल में पहली स्थायी महिला कुलपति

राजस्थान यूनिवर्सिटी की 8 जनवरी 1947 को स्थापना हुई थी। यूनिवर्सिटी के करीब 76 साल के इतिहास में पहली बार स्थायी महिला कुलपति की नियुक्ति की गई है। सर्च कमेटी की सिफारिश के बाद राज्य सरकार के परामर्श से राज्यपाल ने सोमवार को कुलपति के पद पर नियुक्ति के आदेश जारी कर दिए। इससे पहले 11 नवंबर 1998 से 5 नवंबर 1999 तक प्रो. कांता आहुजा यहां अस्थायी कुलपति रह चुकी हैं। प्रो. अल्पना कटेजा 44वीं कुलपति हैं। वे यहां 2009 से कार्यरत हैं। प्रो. अल्पना कटेजा मूल रूप से उदयपुर की रहने वाली हैं। स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा उदयपुर में हुई। आरयू में 2009 से कार्यरत हैं। इसके बाद वे यहां महारानी व राजस्थान कॉलेज की प्रिंसिपल रह चुकी हैं। इकोनॉमिक्स डिपार्टमेंट की हेड और दो बार सिंडिकेट मेंबर भी रही हैं। वर्तमान में एचआरडीसी की डायरेक्टर हैं।

परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

41 वाँ दीक्षा दिवस

आगरा

रविवार, दिनांक 1 अक्टूबर, 2023
दोपहर 12.15 बजे से

आओ करें गुरु वन्दना चले जयपुर से आगरा

स्पेशल डिलक्स एसी बसों द्वारा जयपुर की विभिन्न शहर एवं कॉलोनियों से

दिनांक 1 अक्टूबर, 2023
प्रातः 5.00 बजे – जयपुर से प्रस्थान
सायं 7.30 बजे – आगरा से बापसी
सहयोग राशि : 200/- प्रति सवारी

बस पुण्यार्जक..

- श्री नन्दकिशोर जी महावीरजी प्रमोद जी पहाड़िया
- श्री उत्तम जी पाटनी
- श्री सम्पत जी संजय जी अजय जी पाण्ड्या (श्री जैन रोड़वेज)
- श्री अजय जी विजय जी संजय जी कटारिया
- श्री जम्बू कुमार जी दर्शन जी नवीन जी जैन बस्सीवाले
- श्री शैलेन्द्र जी गोधा (समाचार जगत)
- श्री मोहित जी राणा

संयोजक...
- श्री प्रदीप जी लुहाड़िया
- श्री विनोद जी छाबड़ा 'मोनू'

निवेदक :
सकल दिगम्बर जैन समाज
जयपुर

: सीट बुकिंग हेतु सम्पर्क करें :
महावीर जैन (महावीर यात्रा कम्पनी)
94147-81315 / 98299-99436
अन्तिम तिथि : दिनांक 29 सितम्बर, 2023
जे.के.जैन (केवल मानसरोवर हेतु) 94140-42294

जन्मजयंती समारोह में श्रद्धालुओं का उमड़ा जन सैलाब साहूकार पेट में

दृष्ट संकल्प और प्रतिज्ञाधारी थे। युगप्रधान आचार्य जयमल जी महाराजः महासती धर्मप्रभा

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

चैन्नई। दृढ़ प्रतिज्ञाधारी थे, एक भवा वतारी युगप्रधान आचार्य जयमल जी महाराज। रविवार साहूकार पेट जैन भवन मेंआचार्य जमल जी एवं श्रमण संघ के प्रथम आचार्य आत्माराम जी की जन्मजयंती समारोह में महासती धर्मप्रभा ने गुणगान करते हुए कहा कि इतिहास के पृष्ठों पर ऐसे कुछ ही यशस्वी नाम अमर होते है। जिन्होंने अपने संकल्प और दृढ़ प्रतिज्ञा साधना के बलबूते मानव जाति का उत्थान और कल्याण करते हुए इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर अमर हो चुके है उन सूची मे एक भवावतारी आचार्य जयमलम जी महाराज को उपकारो सम्पूर्ण समाज भूल नहीं पाएगा जो एक दृढ़ संकल्पी, अडिग,ब्रहनवर्ती,परम वैरागी तीव्र स्मरण शक्ति धारक, महायोगी, उत्कृष्ट दयावान,महामानव,त्यागी दिव्य अवतारी आत्मा थें आपका जीवन बहुत ही त्याग,तपस्या व साधना से जुड़ा हुआ था। जब आपका जन्म हुआ तभी आपके पिता को रणभूमि में विजय मिली जिससे आपका नाम जयमल रखा गया। उन्होंने अपने जीवन में कभी भी पराजय का मुंह नहीं देखा। अपने जीवन काल में अनेक जगहो पर अधर्म की शिथिलता को मिटाया और धर्म का परचम फहराया। 22 वर्ष की उम्र में एक बार जिनवाणी का श्रवण कर संसार के सुखों को छोड़कर संयमी बने। दीक्षा लेने के पहले ब्रम्हचर्य की प्रतिज्ञा ली,मात्र तीन घंटे तक एक पैर पर खड़े रहकर प्रतिक्रमण सूत्र एवं अल्प समय में कही आगमों को कंठस्थ कर लिए।

संसार शरीर व भोगों से विरक्ति तप से सम्भव : गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी के तत्वावधान में दशलक्षण महापर्व के शुभ अवसर पर श्री दशलक्षण महामण्डल विधान के अंतर्गत आज सातवें दिन उत्तम तप धर्म की पूजन कराने का सौभाग्य कुंदनमल कठमाणा वाले निवाई एवं महेन्द्र गोयल विवेक विहार जयपुर वालों ने प्राप्त किया। आज के चातुर्मास कर्ता परिवार शिखरचंद लालसोट वाले जयपुर वालों ने सौभाग्य प्राप्त किया। पंचमेरु व्रत , दशलक्षण व्रत के उपवास करके श्रद्धालुओं ने उत्तम तप की आराधना की । दूर - दूर से यात्रीगण विज्ञातीर्थ क्षेत्र पर आकर भगवान शांतिनाथ जी की शांतिधारा , पूजा - आराधना करके स्वयं को धन्य कर रहे हैं। आर्यिका विज्ञाश्री माताजी के सान्निध्य में भक्तों ने दश धर्मों का सार समझा। पूज्य माताजी ने उपस्थित जनसमूह को धर्मोपदेश देते हुए कहा कि - कर्मों के लिए जो तपा जाये उसे तप कहते हैं । इच्छाओं को रोकना या जीतना ही तप है । तप बारह प्रकार के होते हैं । अन्तरंग और बहिरंग तप । यद्यपि सम्यक प्रकार से तप तो मुनिराजों को ही होता है , लेकिन श्रावकों को भी शक्ति अनुसार इन तपों की भावना भानी चाहिए। क्यों कि संयम की तरह तप भी चारों गतियों में से मात्र मनुष्य गति में ही संभव है। नरक और तिर्यंच गति में तो दुख की प्रधानता है , लेकिन देवगति में तो जीव को सर्वसुविधायें मिलती है , लेकिन फिर भी वे जीव उत्तमतप धारण करने के लिये तरसते हैं। जिस प्रकार अग्नि का एक तिनका भी बड़े से बड़े घास के ढ़ेर को जला देता है , उसी प्रकार सम्यक तप पूर्व संचित कर्मों के ढ़ेर को जलाकर भस्म कर देता है। संसार शरीर और भोगों से विरक्ति भी तप से ही होती है।

चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर, सेक्टर – 10, मालवीय नगर में 'यक्ष रक्षित भूगर्भ जिनालय' लगाई

जयपुर. शाबाश इंडिया। सुगंध दशमी के पावन अवसर पर श्री चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर, सेक्टर - 10, मालवीय नगर, जयपुर द्वारा भव्य झांकी 'यक्ष रक्षित भूगर्भ जिनालय'' लगाई गई। झांकी में परम पूज्य मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज के कर कमलों द्वारा सांगानेर में जो भूगर्भ चैत्यालय निकाला गया था उन्ही स्मृतियों व क्षणों को पुनः जागृत करने का प्रयास किया गया । इस भव्य झांकी का उदघाटन मंदिर जी के परम शिरोमणि संरक्षक व मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज के अनन्य भक्त, समाज श्रेष्ठि, उत्तम कुमार - श्रीमती सरोज देवी पांड्या एवं परिवार, मालवीय नगर द्वारा किया गया । इस अवसर पर बड़ी संख्या में साधर्मी बंधुओ ने आकर झांकी का अवलोकन किया । इस अवसर पर स्थानीय विधायक कालीचरण सराफ, समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा अर्चना शर्मा सहित भाजपा के कई प्रमुख नेता जितेंद्र श्रीमाली सतीश शाह भी पधारे। झांकी का निर्माण विमलेश राणा के संयोजन में मंदिर व्यवस्था समिति द्वारा मंदिर समिति ट्रस्ट के तत्वावधान में महिला मंडल के सहयोग से किया गया ।

युवा मंच द्वारा आज पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी की जयंती मनाई

कोटा. शाबाश इंडिया। पंडित दीन दयाल स्मृति युवा मंच अध्यक्ष अनिल कुमार व टीम द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 107 वी जयन्ती के उपलक्ष्य मे टिपटा मे पंडित दीनदयाल उपाध्याय पार्क में टीम द्वारा पंडित दीनदयाल जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके उनकी स्मृति याद करते हुए मनाया गया सात ही अध्यक्ष अनिल कुमार ने बताया कि इस अवसर पर पार्क में सफाई की गयी व पौधा रोपण किया गया। पंडित दीन दयाल उपाध्यय की प्रतिमा को शतशत नमन कर उनके विचारो पर गोष्ठीकी गयी। इसअवसर पर पंडित दीन दयाल मंच के जिला महा मंत्री डीके शर्मा, अक्षय उपाध्यक्ष सत्यप्रकाश,जिला मंत्री इंद्रजीत सिंह, मनमित सिंह,योगेश सुमन,राहुल सेनी, राजकुमार राठौर, हर्षित शर्मा आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे।

वेद ज्ञान

भारतीय संस्कृति गुणों की खान

गुण पूजनीय तब बनते हैं, जबकि मनुष्य के जीवन में विचार और आचरण का समन्वय होता है। इसके लिए कठोर साधना करनी होती है। वस्तुतः किसी मार्ग को पकड़कर उस पर चलते जाना साधना नहीं है। धन, सत्ता और भोग के पीछे आंख मूंदकर दौड़ने वालों की संख्या कम नहीं है, उनकी उस दौड़ को साधना नहीं कहा जा सकता। साधना सदा उच्च आदर्शों की उपलब्धि के लिए की जाती है। महावीर ने साधना की थी, गौतम बुद्ध ने साधना की थी। उन्होंने राजपाट का मोह छोड़ा, घर-बार का त्याग किया और सारे वैभव को ठुकराकर उस चरम लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया, जिसकी प्राप्ति के बाद पाने को कुछ भी नहीं रह जाता। भारतीय संस्कृति गुणों की खान है। हमारे यहां हमेशा इस बात पर जोर दिया गया है कि मनुष्य हर तरह से शुद्ध रहे। संयम से जीवन जिए। तप और साधना से जीवन को चमकाए। गुण की सर्वत्र पूजा होती है। आज इसकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आज मानव-मूल्यों का पतन हो रहा है। भौतिक मूल्य चारों ओर छा गए हैं। यही वजह है कि नाना प्रकार की विकृतियों से मानव, समाज और राष्ट्र आक्रांत हो गया है। इंसान का अपना प्रिय संगीत टूट रहा है। वह अपने से, अपने लोगों और प्रकृति से कट रहा है। उसका निजी एकांत खो रहा है और सामाजिकता भी कहीं गुम होती जा रही है। कहां है, वह जीवन, जिसे हमने जीने में ही खो दिया। फिर भी हमें उस जीवन को पाना है, जहां इंसान आज भी पूरी ताकत, अभेद्य जिजीविषा और अथाह गरिमा के साथ जिंदा है। आज मानवता ऐसे चैराहे पर खड़ी है, जहां उसके आगे का रास्ता अंधेरी सुरंग से होकर गुजरता है। लगता है, जैसे स्वार्थ इस युग का गुण बन गया है। भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार हो गया है। उसी की आराधना में सब लिप्त हैं। यह देखते हुए भी कि हम पतन की ओर जा रहे हैं, अपनी गति और मति को हम रोक नहीं पाते। जीवन भार बन गया है। इस स्थिति से उबरने का एक ही मार्ग है, वह यह कि हम अपने अंतस को टटोलें, अपने भीतर के काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि दुगुर्णों को दूर करें और उस मार्ग पर चलें, जो मानवता का मार्ग है। हमें समझ लेना चाहिए कि इस धरा पर मानव-जीवन बार-बार नहीं मिलता और समाज उसी को पूजता है, जो अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीता है।

संपादकीय

अफसरशाही पर नकेल कसने की जरूरत

बुनियादी ढांचा अर्थव्यवस्था का आधार होता है। वित्तीय संकट की स्थिति में भी यही क्षेत्र अर्थव्यवस्था को संबल देता है। मगर देश में बुनियादी ढांचे की तस्वीर बहुत अच्छी नहीं है। इससे जुड़ी अधिकतर परियोजनाएं देरी से चल रही हैं। इसमें लगातार विलंब के कारण सरकारी खजाने पर खर्च का बोझ भी बढ़ता जा रहा है। बुनियादी ढांचे में सड़कें, पुल, सिंचाई के संसाधन, बिजली, बंदरगाह, हवाई अड्डे और सामाजिक महत्त्व की योजनाएं शामिल होती हैं। व्यापक निवेश, लंबी अवधि और सामाजिक लक्ष्यों को देखते हुए ये नियमित परियोजनाओं से बहुत भिन्न होती हैं। इनमें अगर हीला-हवाली या भ्रष्टाचार का घुन लगता है, तो इसका सीधा असर विकास की गति पर पड़ता है। दुर्भाग्य से ऐसा ही हो रहा है। सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय की पिछले महीने आई रिपोर्ट के मुताबिक डेढ़ सौ करोड़ रुपए से अधिक खर्च वाली एक हजार सात सौ बासठ परियोजनाओं में से चार सौ बारह की लागत

इस साल अगस्त तक तय अनुमान से 4.77 लाख करोड़ रुपए बढ़ गई है, जबकि आठ सौ तीस परियोजनाएं देरी से चल रही हैं। इन परियोजनाओं के क्रियान्वयन की मूल लागत बीते मार्च में पच्चीस लाख एक हजार चार सौ करोड़ रुपए आंकी गई थी, लेकिन अब इसे और बढ़ाकर उनतीस लाख अठहत्तर हजार छह सौ इक्यासी करोड़ रुपए किए जाने का अनुमान है। देर से चलने के कारण मूल लागत में बढ़ोतरी वाली परियाजनाओं की संख्या बीते मार्च में एक हजार चार सौ उनचास थी, जबकि देरी से चलने वाली परियोजनाओं की संख्या आठ सौ इक्कीस दर्ज की गई थी। पांच माह में दोनों में ही बढ़ोतरी हुई है। इन आंकड़ों से साफ है कि बुनियादी ढांचा क्षेत्र की हालत दिनों-दिन खराब हो रही है। हालांकि मंत्रालय की रपट में परियोजनाओं की देरी का कारण कोविड के दौरान लागू पूर्णबंदी को बताया गया है। अगर ऐसा मान भी लें तो बीते एक साल में पूरी तरह सामान्य हुए हालात के मद्देनजर स्थिति सुधर जानी चाहिए थी या उसमें सुधार के संकेत तो दिखने ही चाहिए थे लेकिन ऐसा हुआ नहीं। रिपोर्ट में हर स्तर पर मार्च के मुकाबले हालात खराब ही दर्शाए गए हैं। इसके अलावा, योजनाओं की देरी के लिए अन्य बड़े कारण भूमि अधिग्रहण, पर्यावरण और वन विभाग की मंजूरी, निविदा प्रक्रिया तथा ठेके देने और उपकरण मंगाने में देरी के साथ-साथ बुनियादी संरचना की कमी, परियोजना का वित्तपोषण और इसकी संभावनाओं में बदलाव, कानूनी और अन्य अड़चनें, अप्रत्याशित भू-परिवर्तन आदि बताए गए हैं। ये भी ऐसी वजहें हैं, जिनका सीधा संबंध सरकारी मशीनरी के काम करने के तरीके से जुड़ा है। अगर हर विभाग जनहित की परियोजनाओं को गंभीरता से लेकर अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करे तो ये अड़चनें आसानी से दूर की जा सकती हैं। पिछले साल की एक रपट के मुताबिक भारतीय बुनियादी ढांचा क्षेत्र में परियोजना प्रबंधकों, सिविल इंजीनियरों, योजनाकारों, सर्वेक्षणकर्ताओं और सुरक्षा पेशेवरों सहित लगभग तीस लाख पेशेवरों की कमी है। अफसरशाही के पेंच कसने के साथ-साथ इस दिशा में भी ध्यान देने की सख्त आवश्यकता है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

पराली का प्रबंधन...

अमूमन हर वर्ष हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश में पराली जलाने से पैदा परेशानी चिंता का कारण बनती रही है, लेकिन इस पर काबू पाने की कोशिशें अब तक आधी-अधूरी ही रही हैं। अब हरियाणा सरकार का दावा है कि उसकी ओर से वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को सौंपी गई कार्ययोजना के जरिए आग लगने की घटनाओं में काफी हद तक कमी लाई जा सकेगी और इस वर्ष इसके उन्मूलन की कोशिश की जाएगी। दरअसल, सर्दियों की शुरूआत के साथ ही हरियाणा में बड़े पैमाने पर पराली जलाने की घटनाएं सामने आने लगती हैं और इसका वायु गुणवत्ता पर गंभीर असर पड़ता है। आसपास के राज्यों तक इसका प्रभाव देखा जाता है। इसके चलते दिल्ली में भी वायु प्रदूषण चिंताजनक स्तर तक पहुंच जाता है। आरोप-प्रत्यारोपों के बीच सरकारों की ओर से इस समस्या पर काबू पाने के लिए जरूरी कदम उठाने की बात की जाती है, लेकिन नाममात्र के लिए उठाए गए कदमों के समांतर ही बड़े पैमाने पर पराली जलाने की घटनाएं जारी रहती हैं। अब अगर हरियाणा सरकार किसी कार्ययोजना के जरिए पराली प्रबंधन की ओर ठोस कदम उठाना चाहती है, तो इसे स्वागतयोग्य कहा जा सकता है। मगर यह इस बात पर निर्भर करेगा कि जमीनी स्तर पर इसके अमल को लेकर कितनी गंभीरता दिखाई जाती है। यों हरियाणा में पराली दहन एक आम चलन बन चुका है, लेकिन इसकी वजह से जब समस्या गंभीर शक्ल अख्तियार करने लगती है, तब सरकार की नींद खुलती है। खासकर जिन इलाकों में इसका दायरा ज्यादा बड़ा होता है, वहां पैदा होने वाले घुटन भरे माहौल में एक तरह से आम जनजीवन भी बाधित होने लगता है। हरियाणा में इस वर्ष खेतों में आग लगने की पांच सौ से ज्यादा घटनाओं वाले तीन जिले कैथल, जींद और फतेहाबाद को चिन्हित किया गया है। जबकि सिरसा, कुरुक्षेत्र और करनाल आदि को चिंताजनक इलाकों में शुमार किया गया है। यह तब है जब पिछली समीक्षा बैठक में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने राज्य सरकार को चिह्नित जिलों पर विशेष ध्यान देने, जिला और राज्य स्तर पर तैयार की गई कार्ययोजना के प्रभावी और सख्त कार्यान्वयन के अलावा कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया था। हालांकि केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने हरियाणा में पराली जलाने की घटनाओं में काफी कमी आने की बात कही है, लेकिन अब भी कई जिलों में समय रहते कदम उठाने की जरूरत है। मुश्किल यह है कि पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी कोई भी समस्या जब तक संकट का रूप नहीं ले लेती, तब तक न तो सरकार की नींद खुलती है और न ही लोगों को इसकी गंभीरता समझ में आती है। कुछ समय पहले अमेरिका की हावर्ड यूनिवर्सिटी और मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी के शोधकताओं के एक अध्ययन से यह जानकारी सामने आई थी कि देश में पराली और अन्य फसलों को जलाने से फैलने वाले प्रदूषण की वजह से हर साल हजारों लोगों की जान चली जाती है। आंकड़ों के मुताबिक, देश में पराली जलाने से प्रदूषण के करीब सत्तर से नब्बे फीसद हिस्से के लिए पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जिम्मेदार हैं।

सुगन्ध दशमी पर्व पर जयपुर चारदीवारी में लगाई सजीव झांकी

जयपुर. शाबाश इंडिया

सुगन्ध दशमी पर्व पर जयपुर शहर की चारदीवारी में स्थित घिनोई वाला जैन मंदिर, जयलाल मुंशी का रास्ता,चांदपोल बाजार में सजीव झाँकी लगाई गई । राजकुमार पाटनी ने बताया कि इण्डिया से भारत की ओर की थीम पर नवचेतना युवा मंडल के सभी मेम्बर्स ने मिलकर बनाई थी झाँकी । इस झाँकी को 3 पार्ट में दिखाया गया, पहले दृश्य में इंडिया दिखाया है जिसमे आजकल की युवा पीढ़ी वेस्टर्न कल्चर अपना रही है छोटे-छोटे वस्त्रो का पहनावा, पब, डिस्को, कैट वाक, x-mas वेलेन्टाइन डे इत्यादि बाहर के त्यौहार अपना रही है जो कि गलत है। दूसरे दृश्य में हमारा भारत दिखाया है जिसमे कैसे महिलायें अपने त्योहार जैसे... दीपावाली,होली, क्षमावाणी पर्व,रक्षाबंधन इत्यादि मना रहे है जैन मंदिरों में पूजा, कैसे माँ बाप की सेवा कर रहे है। कैसे अपने देश ने चांद पर चंद्रयान 3 भेजा और G20 की मीटिंग इत्यादि दिखाया गया और तीसरे दृश्य में प्रोजेक्टर के माध्यम से आचार्य गुरुवर 108 श्री विद्यासागर जी महाराज का संदेश ''इंडिया नही भारत बोलो'' दिखाया गया है। झाँकी के मुख्य अतिथि शान्तिकुमार ममता सौगानी रहे ।

जैन ग्रंथों पर आधारित ''जैन रामायण'' की लाइव झांकी

जयपुर. शाबाश इंडिया

सुगंध दशमी के अवसर पर टोंक रोड स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर जय जवान कॉलोनी में जैन ग्रंथों पर आधारित ''जैन रामायण'' की भव्य सजीव झांकी रविवार को सजाई गई। जैन ग्रंथों पर आधारित प्रसंगों के साथ भगवान राम और राम के वंशज जैन धर्म होंने का इतिहास को साझा करती इस झांकी के दर्शनार्थ देर रात तक श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अशोक जैन नेता व मंत्री राजा मेहंदीवाला ने बताया कि झांकी का उद्घाटन समाजश्रेष्ठी सुशील कुमार रानीवाला परिवार व दीप प्रज्जवलन रतन लाल कटारिया परिवार ने किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि जितेन्द्र-रीटा गंगवाल रहे। सभी अतिथियों का मंदिर प्रबंध समिति की ओर से भव्य स्वागत सत्कार किया। उन्होंने बताया कि इस झांकी के लिए बच्चों ने बडी बारीकी से हर भूमिका और वाचन को कंठस्थ किया । यह झांकी खास होंने के साथ ही लोगों के लिए प्रेरणादायी रही और झांकी के माध्यम से लोगों ने भगवान राम और राम के वंशज जैन धर्म होंने का इतिहास को साझा किया और देर रात तक झांकी के दर्शन के लिए मंदिर प्रांगण में आते रहे। उन्होंने बताया कि इस सफल झांकी के मुख्य संयोजक संदीप-नीतू कटारिया व रजत-पलक जैन थे। इसके अलावा मृदुला पाटनी,सुमन ठोलिया,मीनू बगड़ा,श्रद्धा कटारिया,कीर्ति जैन,मेहा बख्शी,रूपम लुहाड़िया,बरखा काला, सुरुचि जैन,सोनल जैन,पूजा जैन,प्रियंका चैधरी,राषि बगड़ा, दीप्ति जैन,कविता जैन व नेहा अजमेरा को संयोजक थे। श्री पार्श्व युवा मंडल के अध्यक्ष निखलेश कटारिया व मंत्री अनुज बाकलीवाल ने बताया कि झांकी के रुपिन काला, विशाल जैन, गौरव गोधा,नवीन पाटनी,पुष्पेन्द्र पाटनी, सिद्धांत काला,निहित पांडया,सौरभ अजमेरा,राजीव चैकड़ायत,लव लुहाड़िया,मोहित जैन व आलोक जैन सह-संयोजक थे।

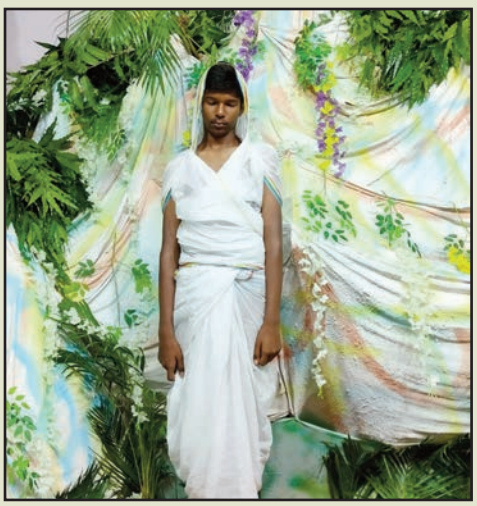

प्रतिभा सम्मान समारोह में 351 प्रतिभाएं सम्मानित

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री राजपूत सभा जयपुर देहात के तत्वावधान में आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह केंद्रीय अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई की अध्यक्षता एवं राजऋषि समताराम एवं बालकदास के पावन सानिध्य में सम्पन्न हुआ। जिलाध्यक्ष मोती सिंह सावली ने बताया कि इस अवसर पर निम्स विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. पंकज सिंह, राजेन्द्र सिंह शेखावत RAS, धीर सिंह शेखावत, पदमश्री लक्ष्मण सिंह खंगारोत ने राजपूत समाज के 351 प्रतिभाओं को उल्लेखनीय उपलब्धियों पर स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। समारोह में सम्पूर्ण जयपुर जिले से सैकड़ो की संख्या में महिलाए , पुरुष, छात्र व छात्राएं उपस्थित रहे। ब्लाक आमेर के मंत्री भवानी सिंह तंवर, दौलत सिंह, करण सिंह, जब्बर सिंह, नरपत सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया।

झांकी के माध्यम से दिया बेटा पढ़ाओ- संस्कार सिखाओ अभियान का संदेश

लक्ष्मणगढ़. शाबाश इंडिया

बेटा पढ़ाओ - संस्कार सिखाओं अभियान आज एक पेड़ बनकर फल फूल रहा है, चारों तरफ अभियान की तारीफें सुनी जा रही हैं। गणेश पूजा महोत्सव के अवसर पर मुनवाड़ी गणेश पूजा महोत्सव समिति द्वारा आयोजित गणेश महोत्सव के अंतिम दिन भगवान गणपति के दरबार में झांकी के माध्यम से बेटा पढ़ाओ - संस्कार सिखाओ अभियान का संदेश दिया गया। कथावाचक विनोद कुमार शास्त्री व जसवंतगढ़ से पधारे आर्टिस्ट, कलाकार गोपालराम, बाबूलाल सोनी सहित आदि कलाकारों के द्वारा गुरु शिष्य की मनमोहक झांकी सजाई गई। झांकी में शुभम घासोलिया ने गुरु व युवराज घासोलिया ने शिष्य की भूमिका निभाई। इस अवसर अभियान के संस्थापक, अध्यक्ष कवि हरिश शर्मा, सह-संस्थापक आकाश झुरिया, प्रमोद झुरिया, विकास झुरिया, राजेश क्याल, सन्देश घासोलिया, हिमांशु मुरारका, शिवकुमार गठेलवाल, रोहित सोनी, राजेश शर्मा सहित अभियान के सदस्य उपस्थित रहे।

श्री केसरिया पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में सजीव झांकी ''देख तमाशा लकड़ी का'' लगाई गई

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री केसरिया पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ,केसर चौराहा ,मुहाना मंडी रोड , मानसरोवर पर सुगंध दशमी पर्व के पावन अवसर पर एक भव्य सजीव झांकी ''देख तमाशा लकड़ी का'' लगाई गई, जिसमे जीवन मे लकड़ी की उपयोगिता ओर महत्व को दशार्या गया। मंदिर जी के अध्यक्ष महावीर कासलीवाल ने बताया की झांकी का विधिवत उद्घाटन समाज श्रेष्ठी शैलेंद्र - मनीषा जैन (त्रिवेणी नगर) एवं परिवार और दीप प्रज्ज्वलन नरेन्द्र - मीना जैन ने किया। ओर मंदिर जी मंत्री नरेश जैन ने बताया कि इस कार्यक्रम में सांगानेर विधान सभा के लोकप्रिय जनसेवक पुष्पेंद्र भारद्वाज, क्षेत्रिय पार्षद शंकर बाजडोलिया , संजय सिंघानिया एवं कई गणमान्य व्यक्ति कार्यकम में पधारे ओर पूरे जयपुर शहर से लोगो ने इस कार्यक्रम में पधार कर शिरकत की एवं झांकी को सराहा। कार्यक्रम के संयोजकों विनीत छाबड़ा, जितेंद्र जैन, सुशील बाकलीवाल,मोहित जैन, कमलेश जैन,हेमंत जैन,भूपेंद्र जैन, अरुण कासलीवाल,तरुण जैन, अनिल जैन,अरविंद जैन, सुरेंद्र जैन ,संजय सेठी, अशोक कुमार जैन, प्रदुमन जैन एवं पर्व जैन ने अपने हाथों से इस भव्य सजीव झांकी का निर्माण किया। ओर इस झांकी मे मंदिर जी से जुड़े हुए सदस्यो ने भाग लिया।

दसलक्षण महापर्व (पर्यूषण पर्व) नौवां दिन 27 सितंबर पर विशेष

'मैं' और 'मेरे पन' का त्याग ही उत्तम आकिंचन्य धर्म

उत्तम आकिंचन्य धर्म : जीवन की सारी यात्रा एकाकी है

जीवन की यात्रा अकेले अकेले , चुपचाप चुपचाप नदी की तरह करनी होगी । जैसे नदी बिना किसी की प्रतीक्षा किये , बिना किसी से बातचीत किये , समर्पित भाव - भाषा में एक लक्ष्य बनाकर चलती है , ठीक वैसे ही हमें जीवन की यात्रा करनी होगी । तब कहीं जाकर के विशाल धर्म के सागर से हमारी मुलाकात होगी और हम उसमें मिलकर / मिटकर स्वयं सागर बन जाओगे। सागर -सी इस अनन्त सत्ता को पाने के लिये बहुत कुछ विचार करने की जरूरत है । जीवन के अन्तरंग तत्त्व का स्पर्श करने की जरूरत है। आज का यह धर्म बताता है कि निर्विकल्प निर्द्वंद्व एकाकी आत्मा की अनुभूति में उतरना पड़ता है। 'मैं' और 'मेरे पन' का त्याग ही उत्तम आकिंचन्य धर्म : आकिंचन्य धर्म आत्मा की उस दशा का नाम है जहां पर बाहरी सब छूट जाता है किंतु आंतरिक संकल्प विकल्पों की परिणति को भी विश्राम मिल जाता है। बाहरी परित्याग के बाद भी मन में 'मैं' और 'मेरे पन' का भाव निरंतर चलता रहता है, जिससे आत्मा बोझिल होती है और मुक्ति की ऊर्ध्वगामी यात्रा नहीं कर पाती। जिस प्रकार पहाड़ की चोटी पर पहुंचने के लिए हमें भार रहित हल्का होना जरूरी होता है उसी प्रकार सिद्धालय की पवित्र ऊंचाइयां पाने के लिए हमें अकिंचन, एकदम खाली होना आवश्यक है। जहां पर भीड़ है, वहांपर आवाज, आकुलता और अशांति है किंतु एकाकी एकत्व के जीवन में न कोई आवाज है और न कोई आकुलता और न अशांति। आज का यह धर्म जीवन की यात्रा को एकाकी आगे बढ़ाने का धर्म है जिसमें अपने और पराए का भेद समझ कर निर्विकल्प निर्द्वंद्व एकाकी आत्मा की अनुभूति में उतरना पड़ता है।

डॉ. सुनील जैन संचय
ज्ञान-कुसुम भवन,नेशनल कान्वेंट स्कूल के सामने, गांधीनगर, नईबस्ती,ललितपुर 284403, उत्तर प्रदेश
मोबाइल, 9793821108
ईमेल- suneelsanchay@gmail.com
(आध्यात्मिक चिंतक व जैनदर्शन के अध्येता)

निर्विकल्प निर्द्वंद्व एकाकी आत्मा की अनुभूति

जिन्दगी की अर्थी में कोई कंधा देने वाला नहीं मिलेगा । इस शरीर से प्राण निकलने पर समाज के चार लोग आकर के फिर भी कंधा दे देंगे। राम नाम सत्य है, अरिहंत नाम सत्य है, कहने वाले मिल जायेंगे लेकिन जिन्दगी की अर्थी में कंधा देने के लिये तो तुम्हें खुद ही तैयार होना पड़ेगा । यह आकिंचन्य धर्म हमें इसी गहराई में ले जाता है । कोई नहीं किसी का साथी , सारी यात्रा एकाकी है। आज का यह धर्म जीवन की यात्रा को एकाकी आगे बढ़ाने का धर्म है जिसमें अपने और पराए का भेद समझ कर निर्विकल्प निर्द्वंद्व एकाकी आत्मा की अनुभूति में उतरना पड़ता है। सांझ घिरते-

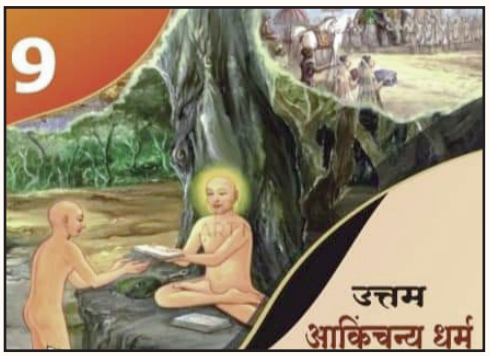

घिरते पक्षीगण एक तरुवर पर आकर विश्राम कर लेते हैं, किंतु सुबह होते ही अपने-अपने कार्य के लिए भिन्न-भिन्न दिशाओं में चले जाते हैं। ठीक इसी प्रकार संसार में हम सभी का निवास है। परिग्रह का परित्याग कर परिणामों को आत्मकेंद्रित करना ही अकिंचन धर्म की भावधारा है। जहां पर भीड़ है, वहांपर आवाज, आकुलता और अशांतिहै किंतु एकाकी एकत्व के जीवन में न कोई आवाज है और न कोई आकुलता और न अशांति।हम जहां पर जी रहे हैं वह कर्तव्य तो करना ही है किंतु यथार्थता का बोध हमें रहना चाहिए।जिस प्रकार पहाड़ की चोटी पर पहुंचने के लिए हमें भार रहित हल्का होना जरूरी होता है उसी प्रकार सिद्धालय की पवित्र ऊंचाइयां पाने के लिए हमें अकिंचन, एकदम खाली होना आवश्यक है। यह आत्मा,संकल्प, विकल्प रूप कर्तव्य भावों से संसार सागर में डूबती रहती है।

"आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यूं कबहूं इस जीव का, साथी सगा न कोय।।"

दुर्गापुरा महिला मंडल ने कवि सम्मेलन आयोजित किया

जयपुर. शाबाश इंडिया

दस लक्षण महा पर्व के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम में 25 सितंबर को चंद्र प्रभु महिला मंडल के द्वारा कवि सम्मेलन रखा गया। मंडल की अध्यक्षा रेखा लुहाड़िया और मंत्री रानी सोगानी ने बताया कि इस प्रोग्राम को सफल बनाने में आशुतोष भैयाजी का पूर्ण सहयोग रहा। दुर्गापुरा की ही महिलाओं ने इस कार्यक्रम में कवियित्री के रूप में अपनी प्रस्तुति सुनिता पाटोदी, मोना चांदवाड, रंजना रांवका,समा जैन, वर्षा अजमेरा छवि पांड्या,इति, रुचि काला, अमिता अजमेरा, रिंकू सेठी, अनिता, श्वेता कविता के माध्यम से जैन धर्म का इतिहास बतलाया। चंदा सेठी, सीमा सेठी,रेखा पाटनी, रेणु पांड्या, रितु चांदवाड, प्रेम देवी आदि उपस्थित रही।

दसलक्षण महापर्व पर हुआ नृत्य प्रतियोगिता का भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। प्राचीन अतिशकारी श्री शांतिनाथ दि जैन मंदिर मेन मार्केट जगतपुरा में दसलक्षण महाकल्याणकारी महापर्व पर मंदिर प्रांगण में श्री शांतिनाथ दि जैन महिला मण्डल की प्रीति गोधा, सुमित्रा जैन के नेतृत्व में जगतपुरा जैन समाज के गौरवशाली बालक बालिकाओं द्वारा अविस्मरणीय धार्मिक नृत्य प्रतियोगिता एवं दसलक्षण महापर्व का महत्व को रखतें हुए अद्भुत विचित्र वेशभूषा का भी आयोजन रखा गया। जगतपुरा जैन समाज के प्रचार प्रसार मंत्री विनोद पापडीवाल ने अवगत कराया । इस अवसर पर नृत्य एवं विचित्र वेशभूषा में समाज के बालक बालिकाएं ने बढ चढकर प्रतियोगिता में हिस्सा लिया एवं प्रतिदिन मंदिर में अभिषेक पूजा अर्चना एवं विश्व मे सुख शांति और समृद्धि की मंगल कामना करते हुए मंत्रोच्चार से जगतपुरा जैन समाज के श्रावकों द्वारा अनन्तमति दीदी राकेश पाटनी के नेतृत्व में शांतिधारा की जा रही है।इसके पश्चात सायंकाल महाआरती महिला मण्डल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं अन्य धार्मिक आयोजन किये जा रहा है। इस अवसर विचित्र वेशभूषा में संदीप सरिता- नृत्य प्रतियोगिता में राकेश रेखा क्षमा दिव्य पाटनी की ओर से विजेताओं को पुरस्कार दिये गये। कार्यक्रम में बच्चों का मनोबल एवं उत्साह वर्धन करने के लिए दिगम्बर जैन महासमिति के राजस्थान आंचल के मंत्री महावीर बाकलीवाल नरेंद्र बाकलीवाल एवं महासमिति के अन्य पद अधिकारी उपस्थित हुए जिनका मंदिर समिति के परम संरक्षक घनश्याम जैन, मंत्री प्रमोद जैन, कोषाध्यक्ष हनुमान प्रसाद जैन, समाज के वरिष्ठ सदस्य राजेश वैद, प्रवीण निर्मल गोधा ने तिलक दुपट्टा पहनकर स्वागत अभिनन्दन किया।

''आओ चलें पाठशाला'' धार्मिक कार्यक्रम में रंग जमाया

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया। 25 सितंबर सोमवार को श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर डीडवाना रोड पर ''श्री महावीर जैन पाठशाला'' के बालकों द्वारा बहुत ही आकर्षक व धार्मिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।इसमें सभी बच्चों द्वारा बढ़ चढ़कर कर हिस्सा लिया गया। पाठशाला बच्चों द्वारा णमोकार की महिमा, वृत उपवास की महिमा देव दर्शन विधि रात्री भोजन अभक्ष्य (जमीकंद) जीवहिंसा त्याग की की लघु नाटिकायो द्वारा सभी दशकों के लिए मन मोहक प्रस्तुति दी अध्यापिका रेखा पहाड़िया द्वारा बताया गया कि लालचंद पहाड़िया द्वारा बच्चों की पाठशाला को इनाम स्वरूप दो बोर्ड दिए गए वह अन्य सभी महानुभाव द्वारा भी पाठशाला को इनाम राशि दी गई कार्यक्रम में संतोष पहाड़ियां विमल चन्द पहाड़िया चिरंजी लाल पाटौदी वअन्य सभी गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का आयोजन पाठशाला की अध्यापिकाओं श्रीमती अलका झंझरी, नीलम काला, प्रीति पाटौदी ,आरती पाटौदी, पूनम पटौदी, खुशबू गंगवाल द्वारा किया गया। मन्दिर समिति द्वारा अध्यापिकाओं व बच्चों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी ने कहा...

त्याग वो कहलाता है जो छोड़ दिया जाता है और दान वो कहलाता है जो किसी के उपयोग के लिए दे दिया जाता है

आगरा. शाबाश इंडिया

श्री 1008 शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर के अमृत सुधा सभागार हरीपर्वत में निर्यापक श्रमण मुनिपुगंव श्री सुधा सागर जी महाराज ससंघ के मंगल सानिध्य में 30 वां श्रावक संस्कार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर के आठवें दिन मंगलवार को उत्तम त्याग धर्म मनाया गया । शिविरार्थी ने आठवें दिन का शुभारंभ प्रातःकाल ध्यान,श्रीजी का अभिषेक एव वृहद शांतिधारा के साथ किया। शिविराथीयों ने मुनिश्री ससंघ के मंगल सानिध्य एवं ब्रह्मचारी प्रदीप भैया सुयश एवं ब्रह्मचारी विनोद भैया,ब्रह्मचारी महावीर भैया जी के निर्देशन में मंत्रोच्चारण के साथ सभी मांगलिक क्रियाएं संपन्न की। धर्मसभा का शुभारंभ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ कियो मुनिश्री सुधा सागर जी ने उत्तम त्याग धर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा त्याग कि वह चीज है जो इस बात का संदेश देता है कि कोई न कोई आत्मा से अपराध हुआ है क्योंकि स्वयं की चीज का कभी त्याग किया नही जाता। जो हमारा है वह हमारा ही रहेगा, उसको त्याग करने की बात आगम में नही कंही। जैसे हमारा ज्ञान- दर्शन स्वभाव है इसका त्याग नही करना। त्याग नाम की चीज है ही नही दुनिया मे। स्व चतुष्टय में कोई त्याग करने योग्य वस्तु है ही नही और फिर त्याग को धर्म कहा जा रहा है तो इसका अर्थ है ग्रहण करना, हमने कोई अपराध किया है। मुनि बनना हमारा स्वभाव नही है लेकिन कभी एक गलती करके दूसरी गलती करनी पड़ती है। जेल जाना,प्रतिक्रमण करना, भोजन- पानी ग्रहण करना आत्मा का स्वभाव नही है। तो क्या हिंसा धर्म है, नही, तो नियम लो कि मन-वचन-काय से हिंसा नही करेगे। तुम हिंसा करोगे तो अहिंसा भी धारण करनी पड़ेगी और हिंसा का त्याग कर दो तो अहिंसा की जरूरत ही नही पड़ेगी। अपन को सत्य

बोलने का व्रत नही लेना है बस असत्य बोलने का त्याग करना है। नियम ग्रहण का नही, त्याग का किया जाता है। धर्म क्रिया को करते समय ज्ञानी व्यक्ति को कभी ये अनुभव में नही आता है कि यह क्रिया मैं अनन्तो बार कर चुका हूँ। ज्ञानी व्यक्ति जब भी करेगा उसको यही अनुभव में आता है मैं यह कार्य पहली बार कर रहा हूँ। हमने हर धर्म की सीमाएँ बांध ली, मन्दिर एक घण्टे के लिए आऊँगा। मैं साल भर मे इतना दान दूँगा, मैं दो पूजा नित्य करूँगा। पूजाओं की सीमा बांध ली। कोई भगवान से ये बोलकर नही गया बस भगवन मैंने कोई अपराध कर लिया है, मैंने परिवार बसा लिया है, मेरे ऊपर जिम्मेदारी है। बस भगवान इतनी देर के लिए जा रहा हूँ। यहाँ मन्दिर आने की कोई सीमा मत बांधो,भली 5 मिनिट में चले जाना। सीमा बांधकर मत आओ। असीम कर दो धर्म को। संकल्प करके मत जाना, मैं इतनी देर से मंदिर से लौटूंगा। मन्दिर से घर जाना तो जरूर उसकी सीमा करके जाना, मैं घर मे इतनी देर रहूँगा, उसके बाद मंदिर में आऊँगा, ये है त्याग धर्म। धर जाने की सीमा करो। उपवास की सीमा मत करो, रोटी खाने की करो, मैं इतने दिन भोजन करूँगा। पाप कार्य मे सीमा बांधकर जाना कि मैं इतने दिन के लिए जा रहा हूँ। जब जब तुमने

धर्म को सीमित किया तो समझना तुम्हे सिर्फ मजदूरी मिलेगी। मजदूरी मिलना और मालिक बनकर वसीयत मिलने में कितना अंतर है। नौकर भी काम कर रहा है और बेटा भी काम कर रहा है। नौकर को वेतन मिलता है लेकिन बेटे को वसीयत मिलती है। तुमने भी माला फेरी लेकिन बीच मे मेरु याद आया, मजदूरी में डाल दिये जाओगे और एक ज्ञानी कहता है हे भगवन ये मन बड़ी मुश्किल से माना है, एक माला करने की छूट दी है, हे भगवन ये मेरु कभी आवे ही नही। मन कहेगा बहुत देर हो गयी, खबरदार अभी एक माला ही नही हुई। मेरु कभी आवे नही लेकिन मेरु तो आवेगा। तुम 108 गुरियो की माला को भी असीम कर दो। उस एक माला को फेरते समय आप अनंतानंत भवो तक जितनी मालाये फेरते, उतनी माला का फल एक माला में लग जायेगा। माला फेरते हुए मेरु आ जाये तो भाव आवे कि इतने जल्दी मेरु आ गया और मेरु आते ही आपकी हाय श्वास निकल जाये तो जाओ अनंतानंत मालाओं का पुण्य तुमने पा लिया। दान को असीम कर दो, कोई सीमा नही है दान की। एक कोड़ी देना, सीमा बांधकर मत देना। दान की सीमा मत बांधना कितना देना है। जितना है, देना है। जब तक तुम्हारे पास एक चावल का दाना भी है, तब तक भी मैं दान देता रहूँगा। एक चावल के चार टुकड़े करूँगा लेकिन दान दूँगा। जैसे ही तुमने दान की सीमा को असीम कर दिया तुम्हे अक्षयनिधि का पुण्य बन्ध हो गया। कैसे मिलती है ये अक्षय निधियां ये कल्पवृक्ष। ऐसे ही परिणाम चलते है हम दान की कोई सीमा नही करेगे। बिना दान दिये मुँह में एक दाना भी नही जाएगा। एक चावल का दाना है तो उसके चार टुकड़े करूँगा, एक टुकड़ा मैं खाऊंगा, एक टुकड़ा परिवार खायेगा, एक टुकड़ा किसी भूखे को रखेगे और एक टुकड़ा मेरे पूज्य भगवान और पूज्य गुरुदेव के लिए देगे। त्याग वो कहलाता है जो छोड़ दिया जाता है और दान वो कहलाता है जो किसी के उपयोग के लिए दे दिया जाता है। दान में स्वयं के लिए किसी दूसरे के काम आ जावे। त्याग में स्वयं के लिए काम नही और किसी दूसरे के भी काम नही आवेगा। धर्मसभा में प्रदीप जैन पीएसी,नीरज जैन जिनवाणी,हीरालाल बैनाड़ा, निर्मल मोठया,पन्नालाल बैनाड़ा राजेश बैनाड़ा विवेक बैनाड़ा,जगदीश प्रसाद जैन, सुनील जैन ठेकेदार,राकेश जैन पदेवाले,राकेश सेठी,अशोक जैन, मीडिया प्रभारी शुभम जैन,राहुल जैन,विजय धुर्र,हुकुम जैन काका दिनेश गंगवाल,पंकज जैन, ललित जैन,यतीन्द्र जैन,शैलेन्द्र जैन,राजेश जैन,अंकेश जैन,सचिन जैन,समस्त आगरा सकल जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

रिपोर्ट : मीडिया प्रभारी शुभम जैन

मुनि श्री सुयश सागर जी मुनिराज ने कहा...

पूरे विश्व को स्वस्थ बनने के लिए जैन धर्म के त्याग को जानना आवश्यक

झुमरीतिलैया (कोडरमा). शाबाश इंडिया

जैन धर्म का पवार्धीराज दसलक्षण पर्व का आठवां दिन जैन धर्मावलंबियों ने ''उत्तम त्याग धर्म'' के रूप में मनाया जिले में धर्म और ज्ञान की गंगा बहा रहे महासंत मुनि श्री 108 सुयश सागर गुरुदेव ने अपनी पीयूष वाणी मे भक्तजनों को कहा कि झुमरीतिलैया के लोग प्रतिदिन धर्म उपदेश की गंगा में डुबकी लगा रहे हैं, आज उत्तम त्याग धर्म का दिन दान और विसर्जन का दिन है ,व्यक्ति जीवन भर बाहरी पदार्थों धन वैभव को अर्जन करता है परंतु जब तक बुद्धि और विवेक पूर्वक उसका विसर्जन नहीं हो जीवन का कल्याण नहीं हो सकता, त्याग जरूरी है स्वस्थ जीवन को जीने के लिए जैन धर्म के त्याग की आवश्यकता है पूरे विश्व को स्वस्थ बनाना है तो जैन दर्शन को समझ कर उसे अपनाना आवश्यक है । जैन दर्शन त्याग पर ही टिका हुआ है त्याग से ही हमारे देश की पहचान है जीवन को पूज्य बनाने वाला कोई धर्म है वह त्याग धर्म है ।त्याग के द्वारा ही व्यक्ति ऊंचाइयों को प्राप्त करता है जो जीवन में जितना त्याग करता है वह जीवन में उतनी अधिक ऊंचाइयों को प्राप्त करता है, जीवन में श्रेष्ठ व्यक्ति और महापुरुष बनने के लिए त्याग आवश्यक है, जो अधिक जमा किया है उसका विसर्जन जरूरी है नहीं तो जीवन में ग्रहण लग जाता है बुद्धि और विवेक पूर्वक विसर्जन से कष्ट नहीं होता है स्वस्थ जीवन को जीना है तो जैन दर्शन के त्याग धर्म को समझना जरूरी है जैन धर्म प्रकृति का धर्म है जहां त्याग ही त्याग है यहां देने की संस्कृति है जैन दर्शन में धनपति का सम्मान नहीं उसके त्याग का सम्मान होता है, दान करने वाले सम्माननीय होते हैं परंतु त्याग करने वाले पूजनीय होते हैं दान करने से कभी भी घटता नही प्रातः नया मंदिर में गुरुदेव के मुखारविंद से विश्व शांति धारा का पाठ किया गया नया मंदिर में मुलायक 1008 महावीर भगवान का प्रतिमा का प्रथम अभिषेक व शांति धारा का सौभाग्य मूलचंद सुशील राजकुमार सुनील छाबड़ा परिवार को मिला बड़ा मंदिर में मुलायक पारसनाथ भगवान का प्रथम अभिषेक व शांति धारा का सौभाग्य मंजू देवी बाकलीवाल गुरुदेव की गृहस्थ अवस्था की माता के परिवार दुर्ग छत्तीसगढ़ को मिला पंडाल में भगवान का श्री बिहार एवं प्रथम अभिषेक रजत धारी से शांति धारा का सौभाग्य मूलचंद सुशील शशि छाबड़ा परिवार को मिला। पारसनाथ भगवान की मूल बेदि मे अभिषेक और शांति धारा का सौभाग्य 10

लक्षण व्रत धारी परिवार को मिला स्वर्ण झारी से शांति धारा का सौभाग्य मूलचंद सुशील शशि छाबड़ा परिवार को मिला सुशील शशि छाबड़ा परिवार को ही दीप प्रज्वलन, शास्त्र भेंट, और गुरुवार के चरण प्रक्षालन का सौभाग्य मिला 10 लक्षण व्रत धारी सुनीता सेठी अविता सेठी पिंकी कासलीवाल निकिता सोगानी ईशा छाबड़ा निर्मला सेठी शिल्पा ठोलिया किरण शेट्टी प्रियंका छाबड़ा मेनका पाटौदी को गुरुदेव के द्वारा आशीर्वाद दिया गया । समाज के मंत्री ललित सेठी कार्यक्रम के संयोजक नरेंद्र झाझंरी पार्षद पिंकी जैन मीडिया प्रभारी नवीन जैन राजकुमार अजमेरा ने व्रत धारी के उपवास की अनुमोदना की।

राष्ट्रीय जीव सेवा शिरोमणि सम्मान से कमल लोचन सम्मानित

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान चैंबर ऑफ कॉमर्स, श्री रामकृष्ण गौ सेवा समिति, पर्यावरण संरक्षण समिति, राजस्थान जन मंच ट्रस्ट, पक्षी चिकित्सालय व वेटरनरी चिकित्सकों राजस्थान चैंबर ऑफ कॉमर्स में आयोजित समारोह में पशु ,पक्षी और पर्यावरण की सेवा के लिए 29 वर्षों से सक्रिय कमल लोचन को ''राष्ट्रीय जीव सेवा शिरोमणि सम्मान'' से सम्मानित किया गया। लोचन को महाराष्ट्र के आर्टिस्ट का स्केच चित्र, राजस्थान चैंबर ऑफ कॉमर्स की स्टोन और जेम्स से निर्मित पेंटिंग व रामकृष्ण गौ सेवा समिति ने साफा, पर्यावरण संरक्षण समिति ने गीता पुस्तक एवं अन्य प्रतिनिधियों ने माला, दुपट्टा और शॉल ओढ़ाकर व 51 हजार रुपए नकद देकर सम्मानित किया। समारोह में चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष डॉ. केएल जैन, समारोह अध्यक्ष उपभोक्ता मामलों के विशेषज्ञ देवेंद्र मोहन माथुर, वरिष्ठ पशु चिकित्सा डॉ. तपेश माथुर, डॉ. सुधीर भार्गव, डॉ. आर पी सिंह, गौ सेवा के जग्गू प्रसाद, समाजसेवी अनिल ऋषि, राजस्थान जन मंच के अध्यक्ष अभय नाहर , महिला समिति की रितु लोचन पर्यावरण समिति के राजेश प्रजापति सहित अन्य प्रतिनिधि भी मौजूद रहे। उल्लेखनीय है कि गत 29 वर्षों से लोचन पशु-पक्षी और पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य कर रहे हैं, उनके द्वारा निःशुल्क पक्षी चिकित्सालय का संचालन भी 23 वर्षों से किया जा रहा है अब तक वह 3 लाख से अधिक पक्षियों की इलाज एवं संरक्षण का कार्य कर चुके हैं। कोरोना काल में 700000 से अधिक का पक्षियों का चुगा उन्होंने अलग-अलग चुगा स्थान पर वितरित किया। कमल लोचन की पहल पर राजस्थान में विशेष अभियान चलाकर मकर संक्रांति के अवसर पर घायल पक्षियों की मदद की जा रही है। लोचन के सम्मान पर कई संगठनों के प्रतिनिधियों ने खुशी जताई है।

इच्छाओं का निरोध करना ही तप है : आचार्य श्री विनिश्चय सागर

मनोज नायक. शाबाश इंडिया

भिण्ड। ''इच्छा निरोधः तप'' इच्छा का निरोध करना ही तप है । तप दो प्रकार के होते हैं । अंतरंग तप और वहिरंग तप । उपवास, व्रत, नियम आदि वहिरंग तप हैं और विनय या ध्यान आदि अंतरंग तप है। ऐसे तप वास्तविकता में निग्रंथ दिगम्बर साधुओं के होते है और इस संसार में किसी के पास सामर्थ शक्ति नहीं है कि वो दिगंबर साधुओं जैसा तप कर सके और इन सबसे भी बड़कर है अपनी इच्छाओं को रोकना, अपनी इच्छाओं पर अंकुश लगाना। इसलिए 'दीक्षा ग्रहण करना भी एक विशेष तप है। उक्त विचार बाक्केशरी आचार्य श्री विनिश्चय सागर महाराज ने धूप दशमी के पावन दिवस पर धर्म सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए । आचार्य श्री ने कहा कि दीक्षा अर्थात जिन्होंने अपनी इच्छाओं को दे दिया । अब कुछ भी इच्छा इन्द्रिय विषयों का नहीं है। वह है दीक्षा। दीक्षा से पहले वैरागियों की परीक्षा ली जाती है। इसलिए दीक्षा प्रदान करने से पूर्व मेंहदी, बिनोली, हल्दी आदि कार्यक्रम कराए जाते है। जिसको वैराग्य है वह किसी भी कार्य में उत्साह नहीं रखता, उदासीन भाव से करता है। आज तत्वार्थ सूत्र का वाचन हुआ। आचार्य श्री के पावन सान्निध्य श्रद्धा दीदी को तत्वार्थ सूत्र वाचन का सौभाग्य प्राप्त हुआ । तत्वार्थ सूत्र का अर्घ चढ़ाने का सौभाग्य हुक्की जैन, संतोष जैन परिवार को प्राप्त हुआ । मीडिया प्रभारी ऋषभ जैन अड़ोखर ने बताया कि पर्युषण पर्व के दिनों में आज सुगंध दशमी के पावन अवसर पर अहिंसा ग्रुप भिंड द्वारा आचार्य श्री विनिश्चय सागर जी महाराज की 1008 दीपको के साथ भव्य महा आरती की गई । जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

महाराणा प्रताप से सीखों कैसे करते सनातन धर्म की रक्षा: ठाकुर

अच्छे-बुरे समय में समभाव में रहने वाला ही गोविन्द की नजर में महान

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। अपने धर्म के खिलाफ आचरण करने वालों के साथ कभी खड़े मत रहो। सनातन धर्म की रक्षा करना सीखना है तो वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप से सीखो जिन्होंने घास की खाई पर अपने धर्म ओर स्वाभिमान से कोई समझोता नहीं किया। अपने स्वाभिमान को जागृत करे ओर सनातन की रक्षा के लिए खुद भी जगे ओर बच्चों को भी जगाए। सर्व कल्याण की कामना करने वाले सनातन धर्म की रक्षा करना हम सभी सनातनियों का कर्तव्य है। सनातनधर्मी अपने धर्म पर गौरव करें और कल्याण की राह दिखाए। ये विचार परम पूज्य शांतिदूत पं. श्रीदेवकीनंदन ठाकुरजी महाराज ने मंगलवार दोपहर शहर के आरसी व्यास कॉलोनी स्थित मोदी ग्राउण्ड में विश्व शांति सेवा समिति के तत्वावधान में सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान गंगा महोत्सव के तीसरे दिन कथा में व्यक्त किए। तीसरे दिन जड़भरत संवाद, नृसिंह अवतार, वामन अवतार आदि प्रसंगों की चर्चा की गई। कथा श्रवण के लिए शहरवासियों के साथ आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से भी भक्तों सैलाब मोदी ग्राउण्ड में उमड़ पड़ा। इस दौरान विभिन्न भजनों पर भी श्रद्धालु भक्ति रस में सराबोर होकर थिरकते रहे। ठाकुरजी ने कहा कि संत ओर ग्रंथ दोनों भगवान की वाणी है ओर उनके बताए मार्ग पर चलना सनातनियों का दायित्व है। भगवान को ढूंढने की इच्छा रखो मानव खुद तुम्हारे पीछे घूमेगा। भगवान हमारी माने ये जरूरी है,मनुष्य माने या न माने ये मायने नहीं रखता है। आप वेश से नहीं आचरण से साधु बने। हम किसी का बुरा नहीं सोचते न बुरा देखते है तो घर बैठे ही साधु है। अपने मैं को त्याग जो अपमान करने वाले को भी सम्मान दे उसी को भगवान मिलते है। उन्होंने कथा के माध्यम से सामाजिक समरसता का संदेश देते हुए कहा कि हमारा समय अच्छा चल रहा हो या विपरीत परिस्थितियां बन रही हो हर हाल में समभाव रखने वाला ही गोविन्द यानि परमात्मा की नजर में महान होता है। कौन कितना जिया इससे फर्क नहीं पड़ता कौन कैसे जिया इसका फर्क पड़ता है। जैसी हमारी संगत होगी वैसा ही हमारा रंग-ढंग होगा इसलिए संगत हमेशा श्रेष्ठ की करनी चाहिए। ठाकुरजी ने कहा कि कोई भी सांसारिक साधन बच्चों का जीवन सुखमय नहीं बना सकता केवल भगवान का नाम ही वह कवच है जो बच्चों को यहां भी ओर परभव में भी सुखी रखेंगे। आयोजन समिति के महासचिव एडवोकेट राजेन्द्र कचोलिया ने बताया कि तीसरे दिन हनुमान टेकरी के महंत श्रीबनवारीशरण काठियाबाबा, सुरेन्द्र डांगी, दिनेश पोरवाल, राजेन्द्र सिंघवी, रमेश नेहरिया, गणपत चौपड़ा, फतहलाल जैथलिया, अनिल दरक, राजेश मण्डोवरा, दिनेश कचोलिया, बालूलालजी संदीप पोरवाल, योगेश लढ़ा आदि ने व्यास पीठ की आरती करके देवकीनंदनजी ठाकुर से आशीर्वाद प्राप्त किया। अतिथियों का स्वागत आयोजन समिति के संयोजक श्यामसुन्दर नौलखा, अध्यक्ष आशीष पोरवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष एडवोकेट हेमेन्द्र शर्मा, महासचिव एडवोकेट राजेन्द्र कचोलिया, समिति के कोषाध्यक्ष राकेश दरक, सचिव धर्मराज खण्डेलवाल, संयुक्त सचिव दिलीप काष्ट आदि पदाधिकारियों ने किया। कथा के दौरान राधे-राधे की गूंज के साथ भजनों पर भक्तगण थिरकते रहे।

बंधन हो या मुक्ति सब मन पर निर्भर

पं. श्रीदेवकीनंदन ठाकुरजी महाराज ने कहा कि जीवन में बंधन व मुक्ति का एक मात्र कारण मन है। हमार मन संसार के उन कार्यो में लग जाता है जिसके कारण बार-बार जन्म लेना पड़ता है। उसी से बचने का मार्ग श्रीमद् भागवत कथा बताती है। मनुष्य जन्म ही मुक्ति का एक मात्र मार्ग है। मन में गोविंद बसाने पर गोविन्दधाम चले जाओंगे और मन में संसार सागर बसाने पर नरक ही मिलेगा। उन्होंने कहा कि तन से अधिक मन की सुंदरता जरूरी है लेकिन अधिकतर लोग तन की सुंदरता देखते है। शरीर का नहीं मन का रंग ही काम का है।

कुत्ता घर के अंदर नहीं द्वार पर रखो

देवकीनंदनजी ठाकुर ने कहा कि जिस घर के अंदर कुत्ता रहता है वहा न देवी-देवता न पितृ पूजा को स्वीकार करते हैं चाहे हम कितनी ही पूजा कर लें जिस घर के अंदर कुत्ते रहते है उनके आचार विचार भी प्रभावित होते है। उन्होंने कहा कि हो सकता उनकी कोई बात अच्छी नहीं लगे लेकिन वह वही बात करते है जो सनातन धर्म ओर हमारी संस्कृति के हित में हो। कुत्ते को घर के द्वार पर रखा जाना चाहिए अंदर स्थान नहीं दे सकते। ठाकुरजी ने कहा कि सभी स्वर्ग में जाने की कामना करते है लेकिन कर्म अपने हिसाब से ऐसे करते है जो स्वर्ग जाने का मार्ग रोक देते है। यदि हम स्वर्ग जाना चाहते है तो दूसरों को दुःखी करना, किसी को कलंकित करना, छवि खराब करना जैसे कार्यों पर फुल स्टॉप लगाना होगा। हम जैसे कर्म करेंगे वैसा ही फल पाएंगे। अच्छे कर्म करने पर सुख तो बुरे कर्म करने पर दुःख ही वापस आएगा। उन्होंने कहा कि हम मौत को भूल जाते है ओर क्षणिक सांसारिक सुखों की आस में वह सारे कार्य करते है जो शास्त्रों में निषेध बताए गए है। याद रखे कि पाप की कमाई कभी ज्यादा टिकती नहीं है।

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पारसनाथ चूलगिरी पर दसलक्षण महामंडल विधान का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

दसलक्षण पर्व के पावन अवसर पर श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पारसनाथ चूलगिरी पर 19 सितंबर से 28 सितंबर तक आयोजित होने वाले विधान में लगभग 150 श्रद्धालुओं द्वारा प्रतिदिन बड़े आनंद के साथ प्रात : बजे से श्री अभिषेक शांतिधारा की क्रियाओं के बाद ,देव शास्त्र गुरु, सोलहकरण, पंचमेरू, दसलक्षण महामंडल विधान,पारसनाथ भगवान आदि की पूजाओं का साजों से आयोजन किया जा रहा है।इस अवसर पर 28 सितंबर अनंत चतुर्दशी के दिन प्रातः पूजन के पश्चात 10 बजे श्री जी का अभिषेक किया जाएगा, तत्पश्चात माल की बोलियां होगी, उसके पश्चात विधान का विसर्जन कर श्री जी को पांडुक्षिला से मूल वेदिका पर विराजमान किया जाएगा।

जैन मंदिर एसएफएस में त्याग धर्म पर आज हुआ विशेष कार्यक्रम

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर एसएफएस राजावत फार्म मानसरोवर जयपुर में दस लक्षण महापर्व के त्याग धर्म पर आज विशेष कार्यक्रम बड़े उल्लास और जोश के साथ प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में प्रातः 6:30 बजे नित्य नियम अभिषेक शांति धारा पुण्याजक परिवार सुमति प्रकाश मंजू काला, नवीन अमित गंगवाल ने प्रारंभ की उसके पश्चात मंडल विधान पर चल रही पूजन में त्याग धर्म की स्थापना करने का अवसर अशोक मंजू बाकलीवाल एवं जिनवाणी स्थापना करने का शुभ अवसर श्रीमती सुमन आयुष आदित्य रुचिका समस्त कासलीवाल परिवार सवाई माधोपुर वालों को प्राप्त हुआ। मंडल पर चल रही पूजन में पंडित मिलाप चंद कमल चंद टोंगया लालचंद झांझरी के द्वारा मंडल विधान पर आज के त्याग धर्म पर बड़ी धूमधाम एवं मंत्र उच्चारण के साथ अर्ध चढ़ावाए गए। महामंत्री सौभाग मल जैन ने बताया कि इस दसलक्षण महापर्व के कार्यक्रम में श्रवण संस्कृति संस्थान महिला छात्रावास से आई हुई विद्वान विदुषी अध्यापिकाओं के सानिध्य में प्रवचन एवं पूजन की धर्म प्रभावों का बहुत सुंदर अवसर प्राप्त हो रहा है।

आचार्य सौरभ सागर जी मुनिराज को महावीर नगर के लिए श्रीफल भेट किया

जयपुर. शाबाश इंडिया। प्रताप नगर में चातुर्मास कर रहे आचार्य श्री108 सौरभ सागर जी महाराज को महावीर नगर के लिए मंदिर जी प्रबंध कार्यकारणी द्वारा श्री फल भेट किया। इस अवसर पर मंदिर जी के अध्यक्ष अनिल जैन (रिटायर्ड I.P.S.) मंत्री सुनील बज, सयुक्त मंत्री पवन तिजारा वाले और मंदिर कार्यकारणी सदस्य रमेश सोगानी, नितिन पाटनी, और मेम्बर राजेंद्र पापडीवाल उपस्थित थे।

उत्तम त्याग धर्म की पूजन हुई

जयपुर. शाबाश इंडिया। भादो माह में चल रहे दशलक्षण पर्व पर उत्तम त्याग धर्म पर महावीर नगर स्थित जैन भवन में विशेष पूजन हुई । इस अवसर पर रतन लाल कोठारी ने दान की महिमा बताई। प्रसिद्ध गायक अशोक गंगवाल ,धरम चन्द भोच,और सुभाष बज द्वारा पुरे महीने नियमित पूजन करवाई जा रही है । आज उतम त्याग पर धरम चन्द भोच ने अपने भजन की प्रस्तुति दी। मंदिर जी प्रबंध कार्यकारणी के अध्यक्ष अनिल जैन (कढ.र. रिटायर्ड) मंत्री सुनील बज ने बताया की आगामी 28 सितम्बर को अनंत चतुर्दशी पर मन्दिर जी में प्रातः स्वर्ण कलश से भगवान के अभिषेक शांति धारा,नियमित पूजन, दोपहर में जैन भवन में चौबीस भगवान की पूजन के पश्चात 4:00 बजे सदस्यों की वार्षिक साधारण सभा एवं शाम 5:30 बजे कलशाभिषेक के बाद सामूहिक आरती होगी।

दुष्प्रवृतियो के त्याग कर उत्तम त्याग धर्म मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया

नेमीसागर कालोनी स्थित जैन मंदिर में दसलक्षण महापर्व में उत्तम त्याग धर्म की पूजन की गई। इस अवसर पर विधानाचार्य पंडित रमेश शास्त्री ने कहा कि आज के दिन अपनी दुष्प्रवृत्तियो और बुरी आदतों का त्याग करना चाहिए। अध्यक्ष जे के जैन कालाडेरा ने बताया कि सांयकाल मे म्यूजिकल धार्मिक हाऊजी एवं भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसकी प्रस्तुति प्रसिद्ध गायिका समता गोदिका द्वारा की गई। कार्यक्रम के पुण्यार्जक महावीर भानगड़िया एवं परिवार थे। पूजन स्थापना वीरेन्द्र गोधा द्वारा की गई। आरती पदम पहाड़िया द्वारा एवं दीप प्रज्वलन अश्विनी मधु जैन द्वारा किया गया। अशोक किरण झांझरी ने पुरस्कार वितरण किया। वंशिका, स्वस्ति एवं उन्नति द्वारा मंगलाचरण किया गया। कार्यक्रम में जैन समाज के गणमान्य व्यक्ति तथा काफी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

त्रिवेणी नगर में उत्तम त्याग धर्म की पूजन की

जयपुर. शाबाश इंडिया। वीतराग दस लक्षण धर्म के आठवें दिन मंगलवार को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर त्रिवेणी नगर में उत्तम त्याग पर्व श्रद्धापूर्वक मनाया गया। उत्तम त्याग धर्म की पूजा 'उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा निहचै राग-द्वेष निरवारे, ज्ञाता दोनों दान संभारे' अशोक पापड़ीवाल के निर्देशन में अर्घ समर्पित किया गया। समिति के अध्यक्ष महेन्द्र काला ने बताया की प्रातः महावीर-तिलक कासलीवाल व शैलेन्द्र जैन परिवार को मंत्रोच्चारण के बीच शांतीधारा का सौभाग्य मिला। शाम को आरती पश्चात शास्त्र प्रवचन में पंडित सुश्री विपाशा जैन ने उत्तम त्याग लक्षण पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम का दीपप्रज्वलन राजकुमार, अजय,विजय, नीलकमल पाण्डया परिवार द्वारा किया गया । धार्मिक अंतराक्षी कार्यक्रम प्रतिभा, आभा पाण्डया द्वारा खिलाई गई । प्रतियोगिता के विजेताओं को पारितोषिक श्रीमती राजकुमारी, आशीष, मनीष छाबड़ा द्वारा दिया गया ।

संकलन : नरेश कासलीवाल

दशलक्षण महापर्व पर अभिषेक शांतिधारा...

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुर्गापुरा, जयपुर में दशलक्षण महापर्व पर 26 सितंबर मंगलवार को प्रातः 6.30 बजे मूल नायक श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान जी के प्रथम अभिषेक शांतिधारा करने का पुण्यार्जन लाल चंद हरिश जैन छाबड़ा परिवार ने प्राप्त किया। दश लक्षण महा मण्डल पूजा के सोधर्म इन्द्र इंद्राणी सुनील कुमार, श्रीमती सुशीला जैन काला महा आरती का पुण्यार्जन अभिषेक कर्ता गण ने प्राप्त किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द जैन चांदवाड़ एवं मंत्री राजेन्द्र कुमार जैन काला ने बताया कि विधानाचार्य पंडित दीपक शास्त्री के मंत्रोच्चार एवं संगीतकार पवन बड़जात्या एवं पार्टी की मधुर आवाज में उत्तम त्याग धर्म की पूजा भक्ति भाव से श्रद्धालुओं द्वारा की गई। महाआरती के पश्चात उत्तम त्याग धर्म पर श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर की गरिमा व रीतिका जैन बालिकाओं ने प्रवचन किए। ट्रस्ट की सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती रेखा पाटनी एवं श्रीमती ऋतु चांदवाड़ ने बताया कि सांस्कृतिक कार्यक्रम में फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पवन कुमार गुणमाला लुहाड़िया थे। पंडित दीपक शास्त्री परिवार ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। पारितोषिक वितरण जैन इंजीनियर सोसायटी नार्थ ने प्रदान किए।

सुगंध दशमी महापर्व पर विशाल झांकी सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि लगाई

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, राधा निकुंज नवयुवक मंडल के तत्वावधान में सुगंध दशमी महापर्व पर विशाल झांकी सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि को देखने के लिए भीड़ उमडी उपस्थित जनमानस के विचारों से ऐसा प्रतीत हो रहा था की वह साक्षात द्रोणगिरि पर्वत की वन्दना कर रहे थे। भव्य झांकी द्रोणगिरि सिद्ध क्षेत्र का अवलोकन करने लगभग 4 - 5 हजार जैन सधर्मी बन्धु अलग अलग कॉलोनियों से पधारे। द्रोणगिरि सिद्ध क्षेत्र का अवलोकन करके सभी अनुरागी अपने आप को धन्य समझ रहे थे। नवयुवक मंडल अध्यक्ष अभिषेक शाह एवं झांकी संयोजक रवि , मानव जैन एवं अन्य संयोजको ने बताया झांकी का उद्घाटन समाज श्रेष्ठी शैलेन्द्र जैन, दीपप्रज्जवलन समाज श्रेष्ठी राजीव जैन ने किया ।

त्याग के बिना जीवन नहीं फलता : मुनी श्री जिनानंद जी महाराज

जयपुर. शाबाश इंडिया

मीरा मार्ग मानसरोवर जयपुर में आदिनाथ भवन में विराजमान आचार्य 108 श्री वसुनंदी जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य श्री जिनानंद जी महाराज ने उत्तम त्याग पर अपने प्रवचन में कहा कि त्याग के बिना जीवन फलता फूलता नहीं है। इसीलिए किसान अच्छे बीजों का त्याग कर नई फसल के लिए रखता है और उससे और अच्छी फसल प्राप्त करता है। उत्तम त्याग के लिए न्यायपूर्ण धन का अर्जन कर त्याग करना चाहिए। नदियां अपना पानी लगातार त्याग करती रहती है । इस कारण से उसका पानी मीठा होता है परंतु समुद्र सिर्फ ग्रहण ही करता है और त्याग नहीं करता इसलिए वह खारा होता है। शास्त्रों में अपनी कमाई का कुछ अंश दान करने की महिमा बताई है। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की कड़ी में श्री आदिनाथ दिगंबर जैन महिला जागृति समिति द्वारा मुक्ति का स्वयंवर का नाटक का मंचन किया गया ।

सकल जैन समाज द्वारा उत्तम त्याग धर्म के दिन महाआरती का किया आयोजन

वी के पाटोदी. शाबाश इंडिया

सीकर। श्री दिगम्बर जैन समाज द्वारा दसलक्षण महापर्व का आठवां दिन मंगलवार को उत्तम त्याग धर्म के रूप में मनाया गया।दीवान जी की नसियां में ब्रह्मचारिणी सरिता दीदी ने अपने अमृतमय प्रवचन में कहा कि त्याग के बिना कोई धर्म जीवित नहीं रह सकता। जिसने भी अपने जीवन में त्याग किया है वही चमकता है। समस्त भोग विलास की वस्तु का त्याग करना ही मुक्ति का मार्ग है। भगवान श्रीराम , भगवान महावीर आदि महापुरुष अपने त्याग धर्म के कारण जन-जन में पूजनीय और वंदनीय हुए । धर्म और आत्मा को जीवित रखने के लिए त्याग आवश्यक है ।प्रवक्ता विवेक पाटोदी ने बताया कि त्याग धर्म के अवसर पर जैन मंदिरों में उत्तम त्याग धर्म की विधि विधान के साथ पूजा अर्चना हुई। इसके पूर्व विश्व शांति मंत्रों के द्वारा अभिषेक पूजन शांतिधारा की गई । समाज के जयंत पाटोदी , संजय बड़जात्या व प्रवक्ता विवेक पाटोदी ने बताया कि मंगलवार को सांयकाल सकल जैन समाज के तत्वाधान में दीवान जी की नसियां में मानस्तंभ के समक्ष भव्य महाआरती का आयोजन ब्रह्मचारिणी सरिता दीदी व बबीता दीदी के सानिध्य में किया गया । इस दौरान संपूर्ण जैन समाज उपस्थित हुआ । यह समाज में ऐतिहासिक अवसर था जब मानस्तंभ के समक्ष एक जैसे गणवेश में म्यूजिकल ट्रैक पर महाआरती का भव्य आयोजन किया गया । वीरध्वनि व आचार्य ज्ञान सागर युवा मंच, जैन सोश्यल ग्रुप द्वारा आयोजन में सहयोग प्रदान किया गया ।

जैन मंदिर विवेक विहार में संगीत मय हाऊजी आयोजन किया

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर विवेक विहार में मंगलवार शाम को कार्यक्रम आयोजित किए गए। समाज के सचिव नरेश ने बताया कि श्रीजी की आरती के साथ भक्ति में कार्यक्रम की शुरूआत हुई आरती के पुण्यार्जक धर्मेंद्र कविता गंगवाल परिवार का माला दुपट्टा पहन कर अभिनंदन किया गया। आरती में संगीतकार संजय जैन लाडनूं एवं मनोज जैन ने प्रस्तुति दी। आरती के पश्चात ब्रह्मचारिणी पूर्णिमा दीदी जय श्री दीदी द्वारा प्रतिक्रमण कराया एवं प्रवचन दिया । पर्यूषण पर्व संयोजक दीपक सेठी ने बताया कि कार्यक्रम का दीप प्रजलन पदमचंद राजमती देवी पाटनी ने किया सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रथम चरण में दो मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई इसके बाद में महिला मंडल की ओर से संगीत मय हाऊजी का प्रोग्राम किया हाऊजी में बच्चों महिलाओं एवं पुरुषों ने आनंद और उल्लास के साथ में भाग लिया गया । केशव सर पर फौजी प्रतियोगिता के पुण्यार्जक परिवार अशोक कुमार सुमित्रा निगोतीया एवं दिलीप कुमार सरिता सेठी का महिला मंडल की ओर से स्वागत किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष अनिल जैन आईआरएस, सचिव सुरेंद्र पाटनी, कोषाध्यक्ष पारस छाबड़ा, उपाध्यक्ष अरुण रावकां, नीरज ठोलिया, महेश जैन, सुनील सरावगी, विकास कल जापान वाले, पार्षद मोनिका जैन, अंजना काला, महिला मंडल सचिव अलका पांडया, सुनीता कासलीवाल, रौनक बगड़ा, मीनू अजमेरा, शिल्पी बगडा,शालिनी बगड़ा,नीलू छाबड़ा सहित समाज के सदस्यगण उपस्थित थे।

त्याग हमारी आत्मा को स्वस्थ और सुंदरतम बनाता है

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

नसीराबाद। त्याग हमारी आत्मा को स्वस्थ और सुंदरतम बनाता है। यह बात आर्यिका तपोमति माताजी की शिष्या ब्रह्मचारिणी अन्जना व अर्चना दीदी ने दस दिवसीय पर्युषण पर्व के आठवें दिन मंगलवार को उत्तम त्याग धर्म की महिमा बताते हुए कहीं। उन्होंने कहा कि त्याग का संस्कार हमें प्रकृति से ही मिलता है। वृक्षों में पत्ते आते हैं वह झड़ जाते हैं, फल लगते हैं और गिर जाते हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार रक्त से सने हुए वस्त्र को जल से धोकर शुद्ध कर लिया जाता है उसी प्रकार पाप से मलिन जीवन को ग्रह त्यागियो को आहार-दानादि से शुद्ध कर लिया जाता है। ब्रह्मचारिणी ने अपने संबोधन में दान की महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दाता चार प्रकार के होते हैं। पहला गीली लकड़ी की तरह, दूसरे पत्थर की तरह, तीसरे घांस-फूस तरह व चौथे कपूर की तरह। नाम के लिए दिया गया धन कभी दान नहीं होता है। धन की तीन ही गति मानी गई है। दान, भोग और नाश। धन किसी को दे दिया या परोपकार व सेवा आदि में लगा दिया तो ठीक अन्यथा नाश तो होता ही है।

उत्तम त्याग धर्म पर बच्चों की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर अंबाबाड़ी जयपुर में दशलक्षण महापर्व के उपलक्ष में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की कड़ी में उत्तम त्याग धर्म पर समाज के डेढ़ वर्ष से 12 वर्ष तक के बच्चों बच्चों ने फैंसी ड्रेस मे भाग लिया आदिनाथ नवयुवक मंडल अंबाबाड़ी के अध्यक्ष कमलेश चॉदवाड ने बताया कि इस प्रतियोगिता का अवलोकन करने के लिए जैन युवा महासभा विद्याधर नगर जोन के अध्यक्ष डा. नीरज जैन महामंत्री अनिल जैन ,पंकज जैन और सांस्कृतिक मंत्री कशिश जैन मौजूद रहे। अंबाबाड़ी संगिनी ग्रुप द्वारा कार्यक्रम को संपन्न कराया गया और कार्यक्रम के अंत में राकेश प्रतीक जैन परिवार द्वारा सभी पात्रों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

श्रद्धांजलि सभा

अत्यंत दुख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारी प्रिय

श्रीमती सुशीला कासलीवाल

का निधन दिनांक 26/09/2023 को हो गया है। जिनकी श्रद्धांजलि सभा दिनांक 29/09/2023 शुक्रवार को प्रात : 10 बजे संघी जी जैन मंदिर सांगानेर में रखी गई है।

शोकाकुल : श्री मति सूर्यकान्ता (जेठानी),सुरेश कासलीवाल (पति), कमलेश- प्रेमलता, प्रकाश -अनिता, सुनील-राजुल,आशीष-पल्लवी, अनुराग (भतीजे) सुदीप - कीर्तिका (पुत्र-पुत्रवधु) चन्द्रेश- वर्षा, प्रियांक-रितिका, पराग - मयंका, अनुराग-अंशुमा, सूर्यांश, विरल, हितांशी, पाखी, यथार्थ कासलीवाल (पौत्र-पोत्री) किरण- सुधीर बिलाला, सुनीता बड़जात्या, दीपा- अनुराग बाकलीवाल (भतीजी - दामाद) सुचित्रा - सन्दीप(बंटी) बड़जात्या (पुत्री-दामाद) रिशिता, जेशिता बड़जात्या (दोहिती) ,प्रीति - सौरभ बाकलीवाल(पोत्री- दामाद) पीहर पक्ष :- पदमचंद- सज्जन देवी, विमल चंद , विनोद - सरिता, प्रकाश- अनिता पाटनी ब्यावर